लक्ष्मी अग्रवाल — एसिड अटैक उत्तरजीवी, सामाजिक कार्यकर्ता

लक्ष्मी अग्रवाल दिल्ली की एक आम-सी स्कूल जाने वाली लड़की थीं। उन्हें पढ़ना, अपने परिवार के साथ समय बिताना और भविष्य के सपने देखना पसंद था।

जब लक्ष्मी करीब 15 साल की थीं (2005), उनके साथ एक बहुत गलत घटना हुई—उन पर एसिड अटैक हुआ। इलाज लंबा चला, और उनके लिए रोज़मर्रा की ज़िंदगी भी मुश्किल हो गई। लेकिन लक्ष्मी ने धीरे-धीरे तय किया कि वो सिर्फ अपने लिए नहीं, दूसरों के लिए भी कुछ करेंगी।

कुछ समय बाद लक्ष्मी ने ऐसे लोगों की मदद के लिए आवाज़ उठानी शुरू की जो एसिड अटैक से गुज़रे थे। उन्होंने लोगों को बताया कि ऐसी खतरनाक चीज़ें आसानी से बिकना बंद होनी चाहिए। उन्होंने एक अभियान चलाया और बहुत लोगों का साथ मिला—हजारों लोगों ने समर्थन दिया (करीब 27,000 से भी ज़्यादा सिग्नेचर इकट्ठा हुए)। इससे बात बड़े स्तर पर पहुँची और 2013 के आसपास भारत में एसिड की बिक्री को नियंत्रित करने के लिए नियमों पर ज़ोर बढ़ा।

लक्ष्मी ने सिर्फ नियमों की बात नहीं की, बल्कि यह भी कहा कि पीड़ितों को इलाज, सहारे और सम्मान की ज़रूरत होती है। आगे चलकर वे Sheroes Hangout जैसी जगहों से भी जुड़ीं, जहाँ सर्वाइवर्स को काम करने और आत्मविश्वास वापस पाने का मौका मिलता है।

उनकी मेहनत और हिम्मत को दुनिया ने भी पहचाना, और 2014 में उन्हें International Women of Courage Award मिला।

लक्ष्मी बच्चों को एक आसान बात समझाती हैं: "किसी की शक्ल या निशान देखकर उसे जज मत करो। अगर कोई मुश्किल में हो, तो दयालु बनो, मदद करो, और सही बात के लिए आवाज़ उठाओ।"

और यही उनकी सबसे बड़ी जीत है— उन्होंने अपनी मुश्किल को सीख में बदला, और बहुत लोगों के लिए उम्मीद बन गईं।

https://bharatkibetiyokikahaniyaan.com/
https://bharatkibetiyokikahaniyaan.com/